International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

नारी सशक्तिकरण एवं पारिवारिक भूमिका संघर्ष

ज्योति तिवारी[1], डॉ सुषमा श्रीवास्तव[2]

[1]सहायक प्राध्यापक हिंदी जीडी रुंगटा कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी भिलाई

[2]भ्वक शिक्षा जीडी रुंगटा कॉलेज ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी भिलाई

सारांश

साध्यति नारी अपनी नारी शशितकरण का अपने सत्ता के लिए सचेत अस्तित्व एवम् सचेत होन किप्रक्रिया नारी चेतना है। नारी हमेशा भक्तम भवनात्मक प्यारी पत्नी और समर्पण के लिए तैयार है। नारी शक्ति कारण वह साध्य है जिस पर नारी को वर्चस्व है । वह समाज ही नहि वरन पारिवारिक दयित्वों को पूर्ण कर विकास की प्रकृति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है ।

प्रमुख शब्द - नारीए समाजए दायित्वए पारिवारिक

विकास की प्रक्रिया में निःसंदेह महिलाओं का योगदान सबसे महत्वपूर्ण रहा है। भारत में महिलाओं की स्थिति से संबंधित समिति का मानना है कि समाज के विकास मे महिलाओं की भागीदारी तय करते समय व्यक्तिगत स्वतन्त्रताए समानताए परिवार की स्थितिए सामुदायिक भागीदारी और वैश्विक समाज में पुरुष एवं स्त्री दोनों एक समान है क्योंकि दोनों एक दुसरे के पूरक है मध्यम वर्ग की स्त्रियां आज जो शिक्षित और नौकरी करने वाली स्थितियां की भूमिका निभा रही है उससे उन्हें एक नया सामाजिक एवं आर्थिक दर्जा प्राप्त हुआ हैए तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति उसका दृष्टीकोण भी प्रभावित हुआ हैए विवाह एवं परिवार समाज की दोनो प्रमुख संस्थान हैए सामाजिक जीवन से परिवर्तन होने के प्रमुख कारण - विवाह और भारत में कामकाजी महिलाएँ (1970) नामक अपने शोध अध्ययन में प्रमिता कपूर ने पाया कि सामाजिक आर्थिक राजनैतिक कानूनी अधिकारो के मिलने से भले ही सैधान्तिक रूप से ही सही शहर की शिक्षित स्त्रियों का स्त्री एवं पत्नी के रूप मे अपनी भूमिका एवं स्थान तथा पुरुष एवं पति के रूप में उत्तरदायित्व एवं स्थान की ओर दृष्टिकोण विशेषकर विवाह एवं परिवार के भीतर तथा बाहर के अपने अधिकारों तथा विशेषाधिकार की ओर बहुत कुछ बदल- चूका है लेकिन क्या स्त्रियों के उत्तरदायित्व और दर्ज की ओर पुरुष वर्ग एवं समाज का दृष्टिकोण बदला है।

भारतीय सामाजिक परिवेश में स्त्री की भूमिका महत्वपूर्ण है संस्कारए मूल्यए रीति रिवाजए परम्पराए प्रथाएँए पारिवारिक तथा व्यक्तिगत परिस्थितयाँ सब आपस में वर्त मिलकर समाज मानसिकता का निर्माण करते हैं सभ्यता में व तथा समाज निर्माण की प्रक्रिया में मानसिकता प्रमुख भूमिका निभाती है पुरुष मानसिकता ही

स्त्री की महत्ता का प्रतिपादन करते हैं। भारतीय समाज में पुत्र जन्म पर प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए सोहर गान की प्रथा से स्पष्ट हो जाता है कि स्त्री की दशा समाज में क्या है। पुत्र जन्म से ही स्त्री की सामाजिक प्रतिष्ठा का आकलन होता है। कन्या जन्म पर स्त्री का दुखए सामाजिक प्रतिष्ठा में कमीए कन्या का पराई होने की मानसिकताए दहेज का बोझए सामाजिक प्रताड़नाए लोकलाज का भय आदि ऐसे कारण हैं जो आज भी भोजपुरी समाज या पूरे भारतीय समाज को कन्या जन्म पर दुखी करते हैं। भोजपुरी समाज में स्त्रियों की व्यथा का मार्मिक चित्रण लोकगीतों में दिखाई पडता है। लोकगीत स्त्रियों के जीवन के अधिक नजदीक होता है सामाजिक प्रतिबंधों के बीच एक स्त्री के लिए गीत ही सहारा होता हैए जिसमें वो अपने मनोभावों को व्यक्त करती है/

इसके अलावा पिछले (1975) के अध्ययन से यह स्पष्ट हुआ कि घर एवं घर के बाहर भी सारी जिम्मेदारियां समेत निभाने के कारण थकान एवं चिड-चिडा स्वभाव हो जाता हो परिणामतः उसका परिवारिक जीवन खुशनुमा नही बन पाता है। धीगडा (1982) के अनुसार 'लगभग आधी कामकाजी महिलाएं नौकरी एवं घरेलू कार्य को तथा पत्नी की भूमिका को निभाने में कठिनाई का अनुभव करती है।' हार (1976) का अध्ययन भी धीगड़ा के अध्ययन को विशेष स्थान देता हैं। दास गुप्ता (1999) ने कामकाजी महिलाओं और इनकी भूमिका संघर्ष सम्बन्धी अध्ययन में यह निष्कर्ष दिया है कि 'विवाह के पश्चात महिलाऐंए पत्नीए मां तथा गृहणी की भूमिका निभाने के कारण सभी कार्यों के बीच समय का विभाजन ठीक-ठीक नही कर पाती है और उन्हें संघर्ष की गहन अनुभूति होती हैं द्यश अग्रवाल राय (1999) का अध्ययन यही दर्शाता है कि 'कार्य का अत्यधिक दबाव और सुविधाओं के अभाव में तनाव का जन्म होता है।' भंडारी माला (2004) का अध्ययन 'कामकाजी महिलाओं में जीवन की गुणवत्ता से संबंधित रहा है जिससे इस बात का अध्ययन किया गयाए कि दोहरी भूमिका महिला के जीवन को प्रभावित करती है।' गुटके नल (1989) ने अपने अध्ययन मैं यहां बताया कि महिलाओं कि भूमिका संघर्ष उस स्थिति में और अधिक बाढ़ जाती है जब परिवार अथवा कार्यरत संस्थान में से किसी भी भूमिका के कार्यों में वृद्धि होती है। भण्डारी (2016) के अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है की 'दोहरी भूमिका के कारण कामकाजी महिलाओं में कार्य की गुणवत्ता प्रभावित होती है परिणाम स्वरुप जीवन के महत्वपूर्ण इच्छाओं का हनन करना पड़ता है।' अनेक विद्वानों द्वारा किए गए अध्ययन से स्पष्ट होता है कि अधिकांश पति-पत्नी के द्वारा नौकरी करने की वजह से पारिवारिक जीवन में अपनी परिवर्तन को स्वीकार करने के लिए तैयार नहीं है अपने अध्ययन के द्वारा प्रमिला कपूर (2016) ने यह बताया कि 'अधिकांश पति-पत्नी यह तो चाहते हैं कि पारिवारिक आपस में वृद्धि के लिए उनकी पत्नी नौकरी करें परंतु साथ-साथ घर बार में कार्य में हाथ बटाने एवं तथा बच्चों की देखभाल में उनके साथ नहीं दे सकते हैं'उनका यह मानना है कि यह कार्य भी पत्नी का ही है ऐसी स्थिति में नारी सशक्तिकरण के कारण औरत दोहरी भूमिका निभाने को तैयार रहती एवं पति के द्वारा सहयोग नहीं मिलने पर भी अपने कार्य में समर्पण की भावना रखती है।

बेरोज़गार पति का साथ उसे परिवार से प्रताड़ित करवाता है तानों के बीच वह एक एक पैसे के लिए ब तरसती हैए ऐसी स्थिति में उसे घ पड़ते हैं। विवशता की स्थिति इस घृणित कार्य भी करने उ लोकगीत में देखी जा सकती है। भारतीय समाज की ये विडम्बना है किए बिगड़ैल बेटा को सुधारने के नाम पर उसका विवाह करवदिया जाता हैए बाप पर निर्भर पति की बेरोजगारी का ताना निर्दोष पतनी झेलती है।

प्रमिला और डिग्रा (2016) के अध्ययन से यह बताया गया कि ‘अधिकां

श स्त्रियों ने उसे बताया था कि उसके पति लापरवाह है तथा प्रातः यह चाहते हैं कि उनके पति परंपरागत रीति के अनुसार उसके पैसों में रहे तथा नौकरी के पश्चात भी घर बार की चिंता करें।‘ जबकि नारी सशक्तिकरण के कारण वह भी चाहते हैं पुरुष के समाज में उनको भी स्वास्थय सुविधा एवं बराबर का अधिकार मिले कामकाजी महिलाएं भी यह समझती है कि अपनी नौकरी के द्वारा परिवार की कमी को दूर कर सके इसके लिए वह सदैव कार्य करती है एवं परिवर्तन तथा रूपांतर लाने का प्रयास करती है एवं महत्वपूर्ण कार्य करता की भूमिका निभा रही है ए लेंइका अन्ना (2020) जेवेत (2020) गोल्ड (2021) किडमैन (2021-22) के अध्यन से भी कोविड -19 के अन्तर्गत यह स्पष्ट होता है की संघर्ष मय स्थिति परिवारिक जीवन को सुव्यस्थित बनाने रखने नारी सशक्तिकरण की भूमिका का निर्वाह कर रही थी इस भूमिका जीवन पर गहरा प्रभाव पढ़ रहा है शाह कल्पना (2022) पर भारतीय समाज के विचारधाराओं को कामकाजी महिलाओं के रोजगार में प्रमुख बाधा मानी जाती है उनका मत है कि पुरुषवादी समाज महिलाओं के द्वारा नौकरी को अच्छा नहीं समझते हैं। काशीनाथ (2022-24) के अध्ययन में यह पाया गया कि परिवार के वातावरण एवं कार्य विभाजन की स्थिति का कामकाजी महिलाओ के व्यक्तित्व पर गहरा प्रभाव पड़ता है इसी प्रकार मौसमी दत्त (2021 25) में महिलाओं का अध्ययन करने का कार्य विभाजन महिलाओं के जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ता है।

बीसवीं शताब्दी का चिन्तनए स्त्री विमर्श के आस 3 घास घूम रहा है ऐसी स्थिति में ग्रामीण समाज का स्त्री समुदाय आज भी पुरुष सत्तात्मक सोच से गढ़ा हुआ है। महिला सशक्तीकरणए स्त्रीपुरुष समान अधिकारए नारी मुक्ति जैसे शब्द समाज की जटिल श्रृंखलाबद्ध संस्कार बोध के सामने बौने नज़र आते हैं। भोजपुरी लोकगीत स्त्री विमर्श के यथार्थ का यथार्थ चित्रण करते हैं। यथास्थिति को नियति मानती स्त्री समाज के द्वारा ही यथास्थिति को लोकगीतों में चित्रित किया गया है। स्त्री विमर्श का कटु यथार्थ की अभिव्यक्त भोजपुरी लोकगीतों - में हुई है। भोजपुरी लोकगीतों का सामाजिक महत्व बहुत अधिक है। समाज के बनाए नियमों में चलती स्त्री का इस हद तक समाजीकरण कर दिया जाता है कि वह नियमों बंधनों से बाहर जाने का सोच भी नही सकती। स्त्री के लिए पिताए माताए भाईए बहनए पतिए सासए ननदए देवरानीए जेठानीए सौत का होना भी आवश्यक है इनके बिना उसका अस्तित्व भी नही है ऐसा सत्य उसके लिए निर्धारित कर दिया जाता है। विभिन्न संस्कारों की पूर्तिकरती स्त्री नतिकता के लिए अपने व्यक्तित्वए अपनी
भावनाओं का समायोजन कर देती है। आज के संक्रमण काल में संस्कारों का दिन प्रतिदिन हास हो रहा है। स्त्री ही वह मुख्य पात्र है जो समाज के संस्कारों का अनुपालन अपना कर्तव्य समझ कर करती है। पुरुष प्रधान समाज में देवी स्वरूपा स्त्री की श्रेणी क्या है यह भोजपुरी लोकगीतों में स्पष्टता देखी जा सकती है। भोजपुरी लोकगीतों में स्त्री की दर्दनाक मार्मिक दशा का वर्णन भोजपुरी समाज में स्त्रियों की सामाजिक

स्थिति का बखान करती है। बेमेल विवाहए बाल विवाहए विधवाए विधवा होनाए बांझ होनाए पुत्रविहीन होनाए गरीबीए कन्या जन्म अभिशापए दहेज प्रथा जैसी घृणित कुरीतियों का दर्द झेलती स्त्री मर मर कर जीती है। स्त्री के नारकीय जीवन का हृदय विदारक चित्र प्रस्तुत करते भोजपुरी लोकगीतए स्त्री यथार्थ की यथार्थ अभिव्यक्ति करते हैं।

अतः इस प्रकार से नारी सशक्तिकरण एवं पारिवारिक संघर्ष के बीच गहरा संबंध है महिलाएं शारीरिक एवं मानसिक रूप से सशक्त होकर प्रत्येक स्रोत में अपना व्यवहार बना कर रखी है एवं संघर्ष में जीवन में प्रत्येक परिस्थिति का सामना कर स्वावलंबी बनना चाहती है एवं पुरुष के साथ-साथ कदम से कदम मिलाकर अपनी पहचान बनाना चाहती है दृढ़ निश्चय शक्ति के माध्यम से नारी सशक्तिकरण के रूप में कार्यरत है।

संदर्भ ग्रंथो की सूची

1ण मैरिज एंड वर्किंग वुमन इन इंडिया दिल्ली विकास पब्लिकेशन 2018

2ण कपूर प्रमिलाय भद जिग स्टेट्स ऑफ़ द ईयर वर्किंग इन वूमेन"

3ण कला रानीय ष्कामकाजी महिलाओं में भूमिका संघर्ष" चेतना प्रकाशनए नई दिल्ली। पृ.44

4ण कपूर प्रोमिलाए भद चेंजिंग स्टेटस ऑफ़ द वर्किंग इन वूमेन इन इंडिया" विकास पब्लिकेशन हाउसप न्यू दिल्ली पेज नंबर 49

5ण सिंघल तारा (2003द्धए भमहिलाओं और परिवार के साथ काम कर रहे हैं" आरबीएसए प्रकाशक एसएचएस सिघवेए जयपुर पेज नं. 25.26

6ण गुप्ता सुभाषए चंद्राय भकामकाजी महिलाएं और भारतीय समाज" अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली गुप्ता सुभाष चंद्रा कामकाजी महिलाएं और भारतीय समाज अर्जुन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली पेज नं. 163.173

7ण श्रीवास्तवए बनाम "भारत में विवाहित महिलाओं की शिक्षा का रोजगार" नेशनल पब्लिशिंग हाउसए नई दिल्ली पेज नं..45

8ण कला रानीए भ कामकाजी महिलाओं में भूमिका संघर्ष"ए चेतना प्रकाशन एसएमएस सिघवे जयपुर पेज नं 26.27

सन्दर्भ

1ण लोकगीतों की सामाजिक व्याख्याए श्री कृष्णदासए पृष्ठ 71

2ण भोजपुरी लोकगीत भाग 2ए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ - 131

3ण भोजपुरी ग्रामगीतए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ 131

4ण उद्धृतए साहित्य अमृतए मार्च 2009ए पृष्ठ 55

5ण भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययनए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ 240

6ण भोजपुरी लोक साहित्य का अध्ययनए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ 241

7ण भोजपुरी ग्राम गीतए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ- 211

8ण भोजपुरी ग्राम गीतए डॉ. कृष्णदेव उपाध्यायए पृष्ठ 71

9ण भोजपुरी लोकगीतों में करुण रसए दुर्गाप्रसाद सिंहए पृष्ठ - 208

10ण भोजपुरी लोकगीतों में करूण रसए दुर्गाप्रसाद सिंहए पृष्ठ 219